Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 11, November - 2023 Publication Date: 30/11/2023

DOIs:10.2018/SS/202311007 --:-- Research Paper / Article / Review

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

अजय कुमार मौर्य
शोधकर्ता , शिक्षा संकाय आई0 आई0 एम0 टी0 , विश्वविद्यालय, मेरठ, उ0प्र0
सहायक प्रोफेसर, बसुंधरा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मुजफ्फरपुर, बिहार
Email - ajaymaurya44037@gmail.com

डॉ0 मुहम्मद जावेद
शोध निदंशक - प्राधयपक, शिक्षा संकाय आई0 आई0 एम0 टी0 , विश्वविद्यालय, मेरठ।

सारांश : समकालीन दुनिया में, मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए जानना आवश्यक हो जाता है जाता कि मूल्य शिक्षा एक बच्चे की स्कूली यात्रा में शामिल है और उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। समकालीन दुनिया में, मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए जानना आवश्यक हो जाता है जाता कि मूल्य शिक्षा एक बच्चे की स्कूली यात्रा में शामिल है और उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

कुंजी शब्द: शिक्षा व्यवस्था, मूल्य शिक्षा, मूल्यमीमांसा ।

1. प्रस्तावना :

शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसी विकास के कारण मानव समस्त प्राणियों की मुकुटमाणि माना गया है। मानव शिक्षा द्वारा ही अपनी वाणी, विवेक, सामाजिकता, सृजनशीलता से विभूषित होता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। यह कार्य मनुष्य के पैदा होते ही शुरू हो जाता है। उस समय वह बोलना, चलना, उठना बैठना कुछ भी नहीं जानता। वह एकदम असामाजिक होता है। परन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वैसे-वैसे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आता है। विद्यालय जाने से पूर्व बालक परिवार एवं समाज से बहुत कुछ सीखता है जिससे उसमें मूल्यों का विकास होता है। सीखने-सिखाने का यह क्रम जीवनपर्यन्त विद्यालय छोड़ने के उपरान्त भी चलता रहता है। मूल्य शिक्षा द्वारा मानव संस्कारित एवं योग्य बनाता है। मूल्य हमें ऐसे दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करते हैं, जो हमारे जीवन में मन-मस्तिष्क को स्वच्छता प्रदान करते हैं। मूल्यों के विकास में विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था, शिक्षकों का आदर्श, आपसी सहयोग, बच्चों के प्रति भावनाओं आदि का विशेष महत्त्व है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा :

लक्ष्मी, वी.विजया और पॉल, एम. (2018) ने अपने अध्ययन में मूल्य शिक्षा की परिभाषा, इसकी आवश्यकता, लक्ष्य, उद्देश्य, इसकी अवधारणा को बढ़ावा देना, भारत में इसके विकास, इसे विश्व स्तर पर कैसे पढ़ाया जाता है, के बारे में चर्चा की और इसमें शिक्षकों की भूमिका का भी विश्लेषण किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि मूल्य शिक्षा छात्रों और समाज को प्रभावित करने वाले पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। कई शिक्षक छात्रों के समग्र विकास और वृद्धि को कम महत्व देते हैं। मूल्यों के पर्याप्त समावेश के लिए शैक्षणिक संस्थानों को भी समर्थन देने की आवश्यकता है। छात्रों को सहानुभूति, साझाकरण, तर्कसंगतता, आध्यात्मिकता, तकनीकी योग्यता सीखने के माहौल में बड़े होने की जरूरत हैय संचार कौशल आदि और उन्हें इस वैश्वीकृत दुनिया में जीवन के हर चरण और क्षेत्र में आत्मसात करें। पाटिल (2013) ने अपने अध्ययन में समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करने का प्रयास किया। इसमें मूल्य शिक्षा को विकसित करने के निहितार्थों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। इस पेपर में लेखिका द्वारा अपने कॉलेज के छात्रों के लिए ष्संस्कार सर्जन ब्लॉगष् बनाने के प्रयास के बारे में भी चर्चा की गई है। लेखक के

अनुसार मूल्य आधारित शिक्षा आध्यात्मिक ज्ञान या आध्यात्मिक चेतना के बिना नहीं सिखाई जा सकती। निष्कर्षतः, जीवन में प्रगति की केवल इच्छा या आकांक्षा ही पर्याप्त नहीं हैय सफलता मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए और इसके लिए आज के संस्थानों में मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। ताकि छात्र अपने चुने हुए क्षेत्रों में अच्छे नेता बनकर उभर सकें। थॉर्नबर्ग (2008) के मूल्य शिक्षा पर किये गए एक अध्ययन, जो स्वीडन के दो स्कूलों में 13 शिक्षकों के साथ किया गया था, में शिक्षकों से स्कूल में किए जा रहे मूल्य शिक्षा कार्यान्वयन पर उनकी राय मांगी गई थी। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है की शिक्षकों ने बच्चों को अच्छे और सही व्यवहार के लिए मार्गदर्शन करने में सक्षम होने के लिए मूल्यों की शिक्षा के महत्व और शिक्षा की समस्याओं और कठिनाइयों पर बल दिया।

3. मूल्य मीमांसा :

मूल्यमीमांसा दर्शन की एक शाखा है। मूल्यमीमांसा अंग्रेजी शब्द "एग्जियोलॉजी" का हिंदी रूपांतर है। एग्जियोलॉजी शब्द "एक्सियस" शब्द यूनानी शब्द "एक्सियस" और "लागस" का अर्थ मूल्य या कीमत है तथा "लागस" का अर्थ तर्क, सिद्धांत या मीमांसा है। अतः एग्जियोलॉजी या मूल्यमीमांसा का तात्पर्य उस विज्ञान से है जिसके अंतर्गत मूल्य स्वरूप, प्रकार और उसकी तात्विक सत्ता का अध्ययन या विवेचन किया जाता है। किसी वस्तु के दो पक्ष हो सकते है - तथ्य और उसका मूल्य।

तथ्य पर विचार करना उस वस्तु का वर्णन कहलाएगा और उसके मूल्य का निरूपण उसका गुणादषारण। मूल्य विषयक निर्णय वस्तु की किसी आदर्श से तुलना करके किसी व्यक्ति द्वारा उपस्थित किया जाता है। हमारे सभी अनुभवों में मूल्यों मापदंड ही होते हैं। सौंदर्यशास्त्र में सुंदर-असुंदर का मूल्यांकन, संगीत, साहित्य और कला में माधुर्य और सरसता का मूल्यांकन और धर्म में मूल्यों के संरक्षण का प्रयत्न तो सभी को स्वीकृत है किंतु साथ ही यह भी ध्यान देने की बात है कि आचारशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति, विज्ञान आदि में भी मूल्यों की समस्याओं पर ही विचार किया जाता है। मूल्यमीमांसा के अंतर्गत इन सभी शास्त्रों और विज्ञानों के मूल्यों का अलग विवेचन नहीं किया जाता वरन् इन सर्वव्यापी मूल्यों के स्वरूप और प्रकृति पर विचार किया जाता है। इस प्रकार आधुनिक युग में मूल्यमीमांसा दर्शन की एक शाखा बनकर द्रुत गति से पल्लवित हो रही है।

मूल्य का तात्पर्य किसी मूल्य का भाव हो सकता है या उसका अभाव हो सकता है। इसके अतिरिक्त भाव या अभाव न होकर कोई मूल्य तटस्थ भी हो सकता है। मूल्य शब्द का प्रयोग इनमें से किसी भी स्थिति के लिये हो सकता है। इसलिये मूल्यमीमांसा को मूल्य का विज्ञान कहना अधिक युक्तिसंगत नहीं हे। फिर भी सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि जिस प्रकार आचार शास्त्र का विवेचन सही और गलत पर केंद्रित रहता है वैसे ही मूल्यमीमांसा का विवेचन प्रायरू अच्छे और बुरे से संबंधित होता है।

मूल्यमीमांसा के अंतर्गत मुख्यतः मूल्य का स्वरूप, मूल्य के प्रकार, मूल्य का भाव सिद्धांत और मूल्य के तात्विक संस्करण का अध्ययन किया जाता है। दार्शनिकों ने मूल्य के स्वरूप की अवधारणा विभिन्न प्रकार से की है। स्पिनोजा आदि ने उसी को मूल्य माना है जिससे किसी इच्छा की तृप्ति होती है।

मूल्य विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनका कई प्रकार से विभाजन किया जा सकता है। प्रायः दार्शनिक अंतर्वर्ती और बहिर्वर्ती मूल्यों का भेद करते है। अंतर्वर्ती मूल्य का स्वतंत्र रूप से अपने लिये ही मूल्य होता है। इन मूल्यों को पाने का प्रयत्न इसलिये नहीं किया जाता कि उनके द्वारा किसी दूसरे उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। वस्तुतः इन मूल्यों को पा लेना ही अंतिम लक्ष्य होता है। बाह्यमूल्य अंतर्वर्ती मूल्यों की प्राप्ति के लिये एक साधन या यंत्र मात्र होते हैं। एक ओर ऐसे वेदांत दर्शन हैं जिनका विश्वास है कि निर्गुण बाह्यरूप में अंतर्वर्ती मूल्य की ही अंतिम सत्ता है, उसके अतिरिक्त सभी बहिर्वर्ती मूल्य हैं जो भ्रांति मात्र है। दूसरी ओर ऐसे फलवादी हैं जो यंत्रवादी सिद्धांत (इंस्टक्र मेंटलिज्म) का समर्थन करते हैं और अंतर्वर्ती मूल्यों का खंडन करते हैं। द्वैतवादी मूल्यमीमांसक अंतर्वर्ती और बहिर्वर्ती दोनों प्रकार के मूल्यों का अस्तित्व मानते हैं। एक शाश्वत होते है और दूसरे नश्वर अधिकांश दार्शनिक इसी सिद्धांत को थोड़े बहुत हेर फेर से स्वीकार करते हैं। कुछ अंतर्वर्ती मूल्यों को प्रधानता देते है और बहिर्वर्ती मूल्यों को उनके अधीनस्थ मानते हैं। कुछ लोग बहिर्वर्ती मूल्यों को प्रधानता देते हैं और अंतर्वर्ती मूल्यों को बहिर्वर्ती मूल्यों की उत्पत्ति या परिणाम मानते हैं। कुछ दार्शनिक (बाहम) ऐसे भी हैं जो सभी वस्तुओं में दोनों प्रकार के मूल्य अपरिहार्य रूप से मानते हैं। वे यह नहीं अस्वीकार करते कि कहीं एक की प्रधानता होती है तो कहीं दूसरे की किंतु ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसमें शुद्ध अंतर्वर्ती या बिल्कुल बहिर्वर्ती मूल्य ही हों।

मूल्य का माप सिद्धांत मनोवैज्ञानिक हो सकता है और तार्किक भी। सुखवादी दार्शनिक मूल्य की माप सुखानुभूति से करते हैं। एरेस्टीपस व्यक्ति के सुख और बेंथम समाज के सुख का मूल्य को मापदंड मानते हैं। बेंथम ने ऐसे सुखगणक की खोज की थी जिसमें सुख की गहनता, स्थायित्व, निश्चितता, निकटत्व, उपयोगिता, पवित्रता व्यापकत्व आदि के अंक निर्धारित कर सुख को मापा जा सकता है। यह मूल्य के मापन का मनोवैज्ञानिक प्रयास है। मारटेन्यू और ब्रेंटानों अंतदृष्टि से मूल्य की माप संभव समझते हैं। कुछ अध्यात्मवादियों ने वस्तुगत आदर्श निश्चित कर रखे हैं और उन्हीं से तुलना करके मूल्यों का मापन करते हैं। कुछ दार्शनिक समष्टि और सामंजस्य में ही मूल्य का गुणावधारण उचित बतलाते हैं। प्रकृतिवादी दार्शनिक जैविक विकास और वातावरण से समंजन को मूल्य की माप मानते हैं। जिस वस्तु, क्रिया या परिस्थिति में जीव का विकास अधिक द्रुत गति से होता है उसका अधिक मूल्य है इसके विपरीत जिनसे जीवन में बाधा उपस्थित होती है, उनको मूल्य नहीं दिया जाता।

मूल्य मीमांसा के क्षेत्र में मानव जीवन के आदर्श एवं मूल्यों की विवेचना आती है। मानव जीवन के अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने के साधनों की विवेचना आती है और मानव के करणीय तथा अकरणीय कर्मों की विवेचना को ही नीति शास्त्र कहते है। हम जानते है कि कोई भी आदर्श, मूल्य का रूप तभी धारण करता है जब वह हमारे आचरण में परिलक्षित होता है, हमारे आचरण का अंश बन जाता है। इसमें इस शब्द की व्याख्या के साथ-साथ जीवन की वास्तविक सौन्दर्य को प्राप्त करने की विधियां भी आती हैं।

4. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों की आवश्यकता :

जब महान दार्शनिक और शिक्षाविद् सुकरात ने लोगों को बौद्धिक रूप से शिक्षित करने के लिए अपनी संस्था 'एकेडमी' खोली होगी तो उनके मन में यह ख्याल भी नहीं रहा होगा कि एक दिन ये शिक्षण संस्थान सबसे अधिक आर्थिक लाभ देने वाले करमुक्त (टैक्स फ्री) उद्योग में बदल जाएंगे और शिक्षा व्यवसायिक गतिविधियों का केन्द्र बनकर रह जाएगी। परन्तु वर्तमान समय यह सब कुछ हो रहा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की खूबियों एवं विशेषताओं के साथ-साथ इसकी कुछ कमजोरियाँ भी हैं जिसका हमारे समाज एवं देश पर बुरा प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। जैसे-आज संयुक्त परिवार टूटकर एकाकी परिवारों में और एकाकी परिवार नैनो फेमिली के रूप में विभाजित हो रहे हैं। अब परिवारों में बड़े बुजुर्गों का स्थान घटता जा रहा है जो बच्चों को कहानियों एवं किस्सों द्वारा नैतिक शिक्षा देते थे। दादी, नानी की कहानियों का स्थान टी. वी., कार्टून, इंटरनेट और सिनेमा ने ले लिया है। जहाँ से मानवीय मूल्यों की शिक्षा की उम्मीद करना बेमानी बात है। विद्यालयों में ऐसी शिक्षा जो बच्चों के चरित्र का निर्माण कर उनमें सामाजिक सरोकार विकसित करे उसका स्थान व्यावसायिक शिक्षा ने ले लिया है, जिसके अंतर्गत हम एक आत्मकेंद्रित, सामाजिक सरोकारों और मूल्यों से कटे हुए एक इंसान का निर्माण कर रहे हैं, जिससे समाज में बिखराव की स्थिति पैदा हो रही है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक बड़ा दोष यह भी है कि यह रोजगारोन्मुख नहीं है अर्थात इसमें कौशल और हुनर का अभाव है। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय डिग्रियाँ बाँटने वाली एजेंसियाँ बन गई हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक, सफल, एवं आदर्श स्वरूप प्रदान करने के लिए इसमें बदलाव एवं सुधार की आवश्यकता है। जिससे यह जीवन को सार्थकता प्रदान करने एवं आजीविका जुटाने में सक्षम हो सके।

5. मूल्य शिक्षा के प्रति संकोच का भाव क्यों?

क्या शिक्षण संस्थाओं का मूल्य यही है कि वे डिग्री/सर्टिफिकेट देकर व्यक्ति को लिपिक (क्लर्क) बनाने या धन कमाने के लिए सड़क पर छोड़ दें? आखिर, विद्यालय के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान है जहाँ एक बालक को बेहतर इंसान बनाने के लिए मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने का प्रावधान हो ? विद्यालयों में शिक्षा के गिरते स्तर से सरकार और शिक्षाविद सभी चिन्तित तो दिखाई पड़ते हैं परन्तु मूल्य शिक्षा को लागू करने के प्रति संकोच का भाव क्यों है ? यह बात तो सभी स्वीकार करते हैं कि वर्तमान समय में विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों जैसे शान्ति, सहनशीलता, प्रेम, सेवाभाव, सहयोग इत्यादि की निरन्तर कमी होती जा रही है। आज के शिक्षित बच्चों के कंधों पर ही कल के समाज का उत्तरदायित्व है। जब उनमें मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं का अभाव रहेगा तो उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वे सामाजिक और पारिवारिक कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनें? संवेदनशून्य व्यक्ति से कर्तव्य-बोध की आशा नहीं की जा सकती है।

समाज के बुद्धिजीवी लोगों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को लागू करने के लिए सकारात्मक माहौल बनाने में आगे आना चाहिए। मीडिया और समाचार-पत्र भी मूल्यों को शिक्षा में लागू करने की आवश्यकता के प्रचार प्रसार में प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं। उच्च शिक्षा के लिए पूरे देश में उत्तरदायी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मूल्य शिक्षा के महत्व को बहुत पहले ही रेखांकित कर चुका है। इस संदर्भ में शिक्षा शास्त्रियों और सरकार में एक जैसी ही सहमति है परन्तु अब तक मूल्य शिक्षा को बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में सरकारें ठोस फैसला नहीं ले सकी हैं। वास्तव , वर्तमान समय राजनीति और राजनीतिज्ञ मूल्यों से भटकाव के दौर से गुजर रहे हैं जबकि शिक्षा का मानवीकरण करने के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

6. मूल्य शिक्षा से सकारात्मक वातावरण का निर्माण जरूरी :

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर लोगों में व्याप्त अज्ञानता और देहअभिमान को परिवर्तन करके कालचक्र के नकारात्मक प्रवाह को सकारात्मक दिशा में मोड़कर, सतयुगी दुनिया की संकल्पना को साकार करना सम्भव है। यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित तथ्य है कि यदि किसीस्थान की जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग किसी एक ही प्रकार के संकल्प में स्थित होते हैं तो उससे उत्पन्न प्रकम्पनों के शक्तिशाली प्रभाव से अन्य लोगों के विचार और व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगता है। जब सत्कर्म करने वाले व्यक्ति एक ही स्थान पर एक सतयुगी समाज की नवरचना का संकल्प करते हैं तो वायुमण्डल में पवित्रता के प्रकम्पनों का प्रवाह शक्तिशाली होने लगता है। मनुष्य और प्रकृति के तत्वों के गुण-धर्म बदलने लगते हैं। मनुष्य का मन अत्यन्त संवेदनशील होता है और वह वातावरण से अत्यन्त सक्रिय रूप से प्रभावित होता है इसलिए यदि हम वास्तव में विद्यालयों के वातावरण को सकारात्मक बनाकर योग्य और

चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना चाहते हैं तो इसका एकमात्र साधन है पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को लागू करना। यही समय की पुकार है और वर्तमान समाज की सर्व समस्याओं का समाधान भी है।

7. मूल्य आधारित शिक्षा में विद्यालयों की भूमिका :

शिक्षा अध्यापन, शिक्षक व पालक एक त्रिकोणीय सह-सम्बन्ध है, जिसका उद्देश्य बालक को समाजोपयोगी बनाना है। मूल्य आधारित शिक्षा में विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान होता है विद्यालय में बालक सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही विधियों से शिक्षा प्राप्त करता है। यहाँ अध्यापक और मित्रमण्डली का प्रभाव उनके व्यवहार और अवधारणओं को प्रभावित करते हैं।

मूल्य शिक्षा को एक अलग अनुशासन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, लेकिन शिक्षा प्रणाली के अंदर शामिल होना चाहिए। केवल समस्याओं को हल करना उद्देश्य नहीं होना चाहिए, इसके पीछे के स्पष्ट कारण और मकसद के बारे में भी सोचा जाना चाहिए। नीचे 21 वीं सदी में मूल्य शिक्षा और इसकी आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाले प्रमुख बिंदु दिए गए हैं-

- मूल्य शिक्षा का महत्व कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में मदद करता है जिससे निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है।
- उम्र के साथ जिम्मेदारियों की एक विस्तृत श्रृंखला आती है। यह कई बार अर्थहीनता की भावना को विकसित कर सकता है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकारों, मध्य-करियर संकट और किसी के जीवन के साथ बढ़ते असंतोष को जन्म दे सकता है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य कुछ हद तक लोगों के जीवन में शून्य भरना है।
- मूल्य शिक्षा का महत्व जिज्ञासा जगाने और मूल्यों और हितों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह आगे कौशल विकास में मदद करता है।
- इसके अलावा, जब लोग समाज और उनके जीवन में मूल्य शिक्षा का अध्ययन करते हैं, तो वे अपने लक्ष्यों और जुनून के प्रति अधिक उत्साहित और बंधे हुए होते हैं। इससे जागरूकता का विकास होता है जिसके परिणामस्वरूप विचारशील और पूर्ण निर्णय लेते हैं।
- मूल्य शिक्षा का मुख्य महत्व मूल्य शिक्षा के क्रियान्वयन और इसकी महत्ता को अलग करने पर प्रकाश डाला गया है। यह 'अर्थ' की भावना को पीछे छोड़ देता है, जो किसी को करना है और इस प्रकार व्यक्तित्व विकास में सहायक है ।

8. विद्यालय में मूल्य आधारित शिक्षा के अवसर निम्नानुसार हो सकते हैं :

अवसर के अनुसार मूल्य शिक्षा

मूल्य शिक्षा सभी शिक्षक अवसरानुसार दे सकते हैं यह जरूरी नहीं है कि इसे विषय शिक्षक के रूप में ही अध्यापन कराया जाये।

विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियायें

विद्यालय में खेलकूद, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविविधियों, यों नाटक, भ्रमण अन्य गतिविधियों द्वारा मूल्य शिक्षा दी जा सकती है।

विद्यार्थियों पर कोई मूल्य न थोपा जाय

बच्चों को सही व गलत का ज्ञान कराकर उन्हें स्वतः प्रेरणा से कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

मित्र मण्डली तथा समूह

बालकों के क्रिया-कलाप तथा सोच निर्माण में मित्रों व समूह की भूमिका बहुत अधिक होती है। विद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि बालक सामूहिक कार्य को भी सही मार्गदर्शन में करें जिससे सही मूल्यों को बालक अपना सकें।

दृश्य/श्रृंव्य सामग्री

विद्यालय में प्रयोगशालाएँ, स्लाइड्स, चलचित्र आदि के माध्यम से जीवन मूल्यों की व्याख्या व स्पष्टता समझा सकते हैं।

विद्यालय का अनुशासन

जिन विद्यालयों में अनुशासनात्मक वातावरण होता है उन बच्चों में वांछित मूल्यों का विकास होता है।

9. निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि मूल्यपरक शिक्षा की अवधारण अपेक्षाकृत आधुनिक तथा व्यापक है। परम्परागत रूप से प्रचलित धार्मिक शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा आदि से यह भिन्न भी है। यह "अमुक कार्य करें" एवं "अमुक कार्य मत करो" की व्याख्या नही है। यह वह आस्था अथवा विश्वास है कि कुछ कार्य निश्चित रूप से निरपेक्षतः अच्छे हैं तथा कुछ कार्य पूर्णतः अथवा निरपेक्षतः बुरे हैं। इसमें कार्यों के पीछे निहित सद्गुणों पर बल दिया जाता है। यह औचित्य के लिए शिक्षा है। प्रायः मूल्यपरक शिक्षा से आशय उस शिक्षा से है, जिसमे हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित है। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है। जिससे उनका सन्तुलित तथा सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. उपाध्याय, डी. एस. (2007). मीमांसा दर्शनम्- सत्यधर्म प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिन्हा, एच. पी. (2018). भारतीय दर्शन की रुपरेखा. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली. आईएसबीएन नंबर 978-8120821446.
3. पाठक आर.पी. और पांडेय अमिता भारद्वाज (2013) वेदांत शिक्षा-दर्शन, कनिष्क प्रकाशक, आईएसबीएनः 9788184575446
4. Dolgun, Ilgaz & Dolgun, TC Omur. (2018). Values Education.
5. Patil, Yojana. (2013). Role of Value-Based Education In Society. 10.13140/RG.2.1.1847.6885.
6. Lakshmi, V.Vijaya & Paul, M. (2018). Value Education In Educational Institutions And Role Of Teachers In Promoting The Concept.